ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-9* October- 2021
Innovation The Research Concept

वैश्वीकरण: जनजातीय समाज के सामाजिक सांस्कृतिक प्रतिमानों पर प्रभाव एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Globalization: Impact on Social Worker Statue of Mass Society A Sociological Study

Paper Submission: 10/10/2021, Date of Acceptance: 24/10/2021, Date of Publication: 25/10//2021

बद्री लाल मीणा
सहायक आचार्य,
समाजशास्त्र विभाग,
एम.जी.आर. महाविद्यालय,
अन्ता, बारां,
राजस्थान, भारत

सारांश / Abstract

वैश्वीकरण वर्तमान आधुनिक समय की पहचान है। जिसके कारण सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड एवं वैश्विक गाँव बन गया है। वैश्वीकरण एक बहुलवादी सामाजिक प्रक्रिया है। जिसका प्रभाव सामाजिक आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों पर स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है। भारत का प्रत्येक क्षेत्र अपनी स्वयं की एक अलग संस्कृति एवं कला रखता है, ऐसा ही जनजातीय समाज में भी देखा जाता है। क्योंकि प्रत्येक जनजाति की अपनी एक अलग संस्कृति एवं कला होती है। जिसके कारण उस जनजाति को पहचाना जाता है, ऐसा ही मीणा जनजाति में देखा गया। इस सभ्यता एवं संस्कृति पर वर्तमान सन्दर्भ में जो वैश्वीकरण के प्रभाव पडे हैं। उन्हीं को शोध पेपर में समाहित किया गया है।

Globalization is the hallmark of the present modern times. Due to which the entire universe and global village has become. Globalization is a pluralistic social process. The impact of which can be clearly seen on the socio-economic, political, cultural and religious fields. Each region of India has its own distinct culture and art. The same is seen in tribal society as well. Because each tribe has its own different culture and art. Due to which that tribe is recognized, the same was seen in the Meena tribe. The effects of globalization on this civilization and culture in the present context. Those have been incorporated in the research paper.

मुख्य शब्दः वैश्वीकरण, प्रोद्यौगिकी, सामाजिक गतिशीलता, प्रतिमान, सूचना तकनीकि, सजातियकरण।

Keywords: Globalization, Technology, Social Mobility, Patterns, Information Technology, Homogeneity.

प्रस्तावना

वैश्वीकरण वह वृहत प्रक्रिया है जिसने सम्पूर्ण विश्व के समाजों के मध्य सामाजिक सम्बन्धों एवं उनकी अर्न्तनिर्भरता को प्रारम्भ किया है। वैश्वीकरण एक नया परिप्रेक्ष्य देता है कि हम दुनिया के अन्य समाजो ंके साथ कैसे सम्बन्ध रखें। विश्व के किसी भी क्षेत्र की समस्याएँ हमारे जीवन को प्रभावित कर सकती है। अतः वैश्वीकरण एक ऐसे नये विश्व परिदृश्य को स्थापित करता है। जिसमें पूरी दूनियाँ समा गयी है,जिसकी अपनी एक पहचान होती है।

'वैश्वीकरण' वर्तमान में सर्वाधिक चर्चित शब्द है। एंथोनी गिडेन्स ने अपनी पुस्तक 'द कांसीसेन्स ऑफ माडर्निटी' में वैश्वीकरण को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''वैश्वीकरण का अर्थ विश्वभर के सामाजिक - सम्बन्धों को इतना प्रचण्ड बना देता है कि दूर-दराज के क्षेत्रों में जो कुछ भी स्थानीय स्तर पर घटे उसे हजारों मील दूर घटने वाली घटनाएँ तय करें।''

"वैश्वीकरण एक जटिल प्रक्रिया है जो प्रौद्योगिकी के उच्च प्रौद्योगिकी में रूपान्तरण के साथ आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन में व्यापक द्रुतगामी परिवर्तनो ंके रूप में परिलक्षित होती है।"[2] जिसके अन्तर्गत वैश्वीकरण ने समय व स्थान की दूरियों को सिमेट दिया है पूरा विश्व एक गाँव बन गया है। वैश्वीकरण के कारण अंतर निर्भरता, विश्वव्यापी संस्कृति, वैश्विक गाँव एवं संस्कृति का सजातीयकरण होने लगा है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने अपना स्वायत्त रूप ऐसा बनाया है कि उसकी दखल ने राजनीति, संस्कृति, समाज, तकनीकी सूचना तकनीकी संचार मीडिया, धर्म संसार आदि को प्रभावित किया तथा इन सभी से वैश्वीकरण की प्रक्रिया भी प्रभावित होने लगी।

भारतीय समाज एवं वैश्वीकरण

भारत में वैश्वीकरण का प्रारम्भ 1991 में हुआ जब नरसिम्हा राव प्रधानमंत्री थे और वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह थे, क्यंोकि देश में राजस्व आय की तुलना में खर्च अधिक हो रहा था। हम विदेशी कर्ज को चुकाने में असफल हो रहे थे। इसलिए इस वैश्वीकरण की प्रक्रिया को अपनाया गया, यह एक नये आर्थिक युग का सूत्रपात था। इस वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने आर्थिक रूप से तो विकास किया पर भारतीय समाज को सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि रूप से प्रभावित किया।

पिछले तीस वर्षो से सेटेलाइट एवं संचार व्यवस्था का विकास इस भाँति हुआ है कि दुनिया के लोग एक दूसरे के साथ आसानी से सम्पर्कमें आ गये। इस वैश्वीकरण की प्रक्रिया से भारतीय समाज के रहन-सहन, खान-पान, रीति रीवाज प्रभावित हुए और भारतीय संस्कृति पाश्चत्य संस्कृति में घुल मिल गयी है। साथ ही भारतीय समाज की पारिवारिक संरचना को भी प्रभावित किया। भारतीय समाज के सामाजिक एवं संास्कृतिक प्रतिमानों पर व्यापक रूप से सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पडां, ऐसा ही प्रभाव जनजातीय समाज के प्रतिमानों पर भी देखा गया है क्यांेकि इस वैश्वीकरण के दौर में जनजातीय समाज भी अछुता नहीं रहा।

जनजातीय समाज एवं वैश्वीकरण

जनजाति एक ऐसा क्षेत्रीय मानव समूह होता है। जिसकी अपनी भाषा होती है, अपने रीति-रीवाज होते है। जिसकी पहचान अलग से दिखाई देती है। जनजातीय समाज ने भी इस वैश्वीकरण की प्रक्रिया व विचारधारा को अपनाया। जनजातीय समाज की परम्परागतसंस्कृति, रीति-रिवाज, रहन-सहन के तौर तरीके, खान-पान के नियम आदि में बदलाव/परिवर्तन आया है। परम्परागत व्यवसाय, उद्योग, धन्धे, लोक गीत, लोक नृत्य आदि में परिवर्तन आ गया है।

वैश्वीकरण की प्रक्रिया से जनजातीय समाज के लोगों में शैक्षिक स्तर बढ़ा, सामाजिक चेतना में वृद्धि हुई जिसके कारण उनमें सकारात्मक सोच पैदा हुई।समाज में प्रचलित जैसे बाल-विवाह, दहेज प्रथा, नाता प्रथा, प्रदा-प्रथा, अन्धविश्वास, अस्पृश्यता, विवाह विच्छेद, कन्या भ्रूण हत्या आदि कुप्रधाओं में परिवर्तन आया है।

शिक्षा एवं सूचना क्रान्ति के कारण जनजातीय समाज के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रतिमानों में बदलाव आया। लोगों की सोच में बदलाव आने से समाज में जो कुप्रथऐं थी, उनका अन्त हुआ। जिसके कारण जनजातीय समाज सभ्य समाज की मुख्य धारा में जुड़ गया। वैश्वीकरण की प्रक्रिया से जनजातीय समाज के सामाजिक सांस्कृतिक प्रतिमानों में परिवर्तन हुआ है। जो वैश्वीकरण का सकारात्मक प्रभाव है।

इसी क्रम में अगर देखा जाए तो वैश्वीकरण का जनजातीय समाज पर नकारात्मक प्रभाव भी पड़ा है। वैश्वीकरण नें हमारी स्थानीय संस्कृति व सामाजिक मूल्यों का विघटन कर दिया है। आज का मानव दो राहे पर खड़ा है जहां एक तरफ अपनी संस्कृति है, तो दूसरी तरफ ऐसे मूल्य व प्रतिमान है। जो उसे आकृर्षित तो करते है, लेकिन पारिवारिक दायित्वोंएवं कर्तव्यों से दूर ले जाते हैं। 2

वैश्वीकरण के कारण जनजातीय समाज के लोगों के बीच सामाजिक सम्बन्धों में दूरियापैदा हुई, महिला पुरूषों में असमानता पैदा हुई, जनजाति के परम्परागत लोकगीत, लोक नृत्यों का ह्रास हुआ, परम्परागत पहनावे का ह्रास हुआ, परम्परागतखान-पान व रहन-सहनके तौर तरीकों में परिवर्तन हुआ, परम्परागत उद्योग-धन्धे बन्द हो गये, गाँवों से शहरों की ओर पलायन बडा। धार्मिक तीज त्यौहा ने पश्चात्य तीज त्यौहारों का रूप धारण कर लिया,संयुक्त परिवारों का विघटन हुआ, प्राथमिक संबंधों का ह्रास हुआ, आदि नकारात्मक प्रभाव जनजातीय समाज पर वैश्वीकरण के कारण पड़े है।

मीणा जनजाति और वैश्वीकरण

मीणा जनजाति की उत्पत्ति मीन भगवान से मानी गयी है। मीणा जनजाति राजस्थान की एक प्रमुख जनजाति मानी जाती है। जिसकी जनसख्ंया राजस्थान में सर्वाधिक है। इस जनजाति के अपने अपने रीति रीवाज और परम्पराएँ होती है। जिनका पालन इस जनजाति के लोग आधिकाल से कर रहे है। वैश्वीकरण की प्रकिया ने इस जनजाति को भी प्रभावित किया है।वैश्वीकरण के प्रभाव को क्षेत्रीय सन्दर्भ में विशेषकर राजस्थान के सन्दर्भ में देखें तो इस प्रक्रिया या विचारधारा का व्यापक असर या प्रभाव देखने को मिलता है। यह अध्ययनबारां जिले की अंता तहसील की ग्राम पंचायत पचेल कला है जो मीणा बाहुल्य ग्राम पंचायत है। इस ग्राम पंचायत की मीणा जनजाती का अध्ययन वैश्वीकरण के सन्दर्भ में किया गया है।राजस्थान में हजारों विदेशी पर्यटक समय-समय पर आते है और राजस्थानी संस्कृति से प्रभावित होकर हमारे सांस्कृतिक और सामाजिक मूल्यों को अपनाते है और यही बस जाते है। इस कारण क्षेत्रीय संस्कृति पर भी विदेशी संस्कृति का व्यापक प्रभाव पडा है। ऐसा ही प्रभाव राजस्थान के जनजातीय समाज अर्थात मीणा जनजाति पर भी देखा गया है। वैश्वीकरण ने मीणा जनजाति के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रतिमानों में बदलाव किया है। उच्च शिक्षा और सूचना तकनीकीने लोगों की सोच को बदला। जिसके कारण सामाजिक गतिशीलता बढ़ी परम्परागतम रीति-रिवाज, विवाह के तौर-तरीके, खान-पान, रहन-सहन के नियम, तीज-त्यौहार आदि में में परिवर्तन आया। व्यवसायिक गतिशीलता बढ़ी,जिसके कारण आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई, राजनीतिक जागरुकता पैदा हुई, मतदान में सहभागिता बढ़ीआदि में बदलाव आया।वैश्वीकरण के कारण सामाजिक भेदभाव कम हुए, सामाजिक चेतना में वृद्धि हुई। यहीं वैश्वीकरण का मीणा जनजाति पर सकारात्मक प्रभाव है।

वैश्वीकरण का मीणा जनजाति के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतिमानों पर सकारात्मक प्रभावों क बाद नकारात्मक प्रभाव भीदेखे गये हैं। जिसके अन्तर्गतअध्ययन क्षेत्र कि मीणा जनजाति के परम्परागत रीति रिवाज लोकगीत, लोकनृत्य, वेशभूषा, खान-पान, व रहन सहन के तौर तरीके आदि पर नकारात्मक प्रभाव पडे है। आगे इसी क्रम में पारिवारिक संरचना का विघटन हुआ। सामाजिक सम्बन्धों में दूरियां पैदा हुई, महिला पुरूषों में असमानता बढ़ी, पाश्चात्य संस्कृति के प्रति झुकाव पैदा हुआ, सांस्कृतिक मूल्यों में कमी आयी, विवाह-विच्छेद के मुकदमें बढ़े, फुहड पहनावे की ओर आकृर्षण बढ़ा परम्परागत मूल्यों ह्रास हुआ, नैतिक मूल्यो का पतन हुआ, लोगों में पारिवारिक संघर्ष पैदा हुए, अपनेपन की भावना का लोप हुआ का आदि नकारात्मक प्रभाव पड़े। अतः यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण का प्रभाव पड़ा पर प्रभावों में सकारात्मक प्रभावों की संख्या अधिक है। अर्थात मीणा जनजाति पर वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभाव अधिक पड़े। परन्तु आज भी विकास की मुख्य धारा की आवश्यकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. वैश्वीकरण के बारे में जानना।
2. जनजातीय समाज के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
3. मीणा जनजाति की सामाजिक व सांस्कृतिक स्थिति का अध्ययन करना।
4. मीणा जनजाति पर पडने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

अध्ययन क्षेत्र

लेखक ने अध्ययन क्षेत्र के रुप में बारां जिले की अन्ता तहसील का गाँव पचेल कला को चुना है। पचेल कला में ग्राम पंचायत मुख्यालय है। जहां पर सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध है। पचेल कला अन्ता तहसील मुख्यालय से 7 किलोमीटर उत्तर-पूर्व दिशा में स्थित है। यहाँ की कुल जनसंख्या ग्राम पंचायत के हिसाब से लगभग 1978 लगभग है। जिसमें लगभग 800 मीणा जनजाति के लोग निवास करते हैं, जिनको अध्ययन में चुना गया है।

अध्ययन पद्धति

अध्ययन के लिए पचेल कला ग्राम पंचायत का चुनाव किया गया। जिसकी जनसंख्या 1978 लगभग है। जिसमें मीणा जनजाति की जनसंख्या 800 के लगभग है। मैंने उद्देश्यपूर्ण निदर्शन पद्धति को अध्ययन में काम लिया है।कुल जनसंख्या में से 200 उत्तरदाताओं का चयन करते हुए। साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से सूचना प्राप्त की है। द्वितीय तथ्यों में पत्र-पत्रिकाओं, इन्टरनेट, प्रकाशित साहित्य, अप्रकाशित साहित्य, उपयोगी पुस्तकें आदि को काम में लिया है।

परिणाम

वैश्वीकरण आधुनिक समय की पहचान है। जिसके कारण समय व स्थान की दूरिया कम हो गयी।वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर भी व्यापक प्रभाव देखा गया है। साथ ही इसका प्रभाव जनजातीय समाज जिसमें में भी मीणा जनजाति पर भी देखा गया। मीणा जनजाति की सामाजिक व संास्कृतिक परम्पराओं पर इसका सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव देखा गया है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि इस प्रक्रिया का प्रभाव व्यापक रहा है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण एक नवीन प्रक्रिया होने के कारण इसने समय व स्थान की दूरियां कम कर दी है। साथ ही इसका सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव भी भारतीय समाज व जनजातीय समाज के सामाजिक व सांस्कृतिक प्रतिमानो ंपर देखा गया है। इस वर्तमान परिवेश में भारत के लोगों ने भी वैश्वीकरण की विचारधारा को अपनाया।जिसके सकारात्क व नकारात्मक परिणाम सामने आये है, वहीं जनजातीय समाज जिसमें मीणा जनजाति के लोगों ने भी इस प्रक्रिया को अपनाया जिसका भी इस शोध पेपर में उल्लेख किया गया है। मीणा जनजाति पर भी इस प्रक्रिया के साकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव देखे गये है। वैश्वीकरण ने जनजातीय समाज को प्रभावित किया पर सकारात्मक प्रभावों की अपेक्षा नकारात्मक प्रभाव कम देखे गये। क्योंकि वैश्वीकरण के कारण जनजातीय समाज के लोगों में उच्च शिक्षा एवं ज्ञान का विकास हुआ है। जिसके कारण सामाजिक गतिशीलता बढ़ी,सामाजिक चेतना में वृद्धि हुई, नकारात्मक सोच में बदलाव आया है। यातायात के साधनों एवं सूचना तकनीकी से दूरियाँ कम हुई है। प्राथमिक सम्बन्धों में नजदीकियाँ देखी गई, व्यवसायिक गतिशीलता बढ़ी, आर्थिक स्थिति मजबूत हुई आदि सकारात्मक प्रभाव मीणा जनजाति पर पडे। परन्तु अभी भी अपेक्षित सुधार की जरूरत है या आवश्यकता है। जिसके कारण मीणा जनजाति का विकास हो सके। इसलिए यह कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण के प्रभावों में सकारात्मक प्रभावों की संख्या अधिक है, जिसके कारण मीणा जनजाति के परम्परागत सामाजिक सांस्कृतिक प्रतिमानों में बदलाव या परिवर्तन आया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *गुप्ता डॉ. मिथलेश - "भूमण्डलीकरण एवं सामाजिक परिवर्तन" गौतम बुक कम्पनी, जयपुर 2013 पेजं. 25*
2. *दोषी एस.एल - "आधुनिकता, उत्तर-आधुनिकता एवं नव सामाजशास्त्रीय सिद्धान्त" रावत पब्लिकेशन्स जयपुर*
3. *कुमार अरूण - "उदारीकरण, भूमण्डलीकरण एवं दलित" रावत पब्लिकेशन्स जयपुर 2009 पेज सं. 286*
4. *कुमार अभय दुबे - "भारत का भूमण्डीकरण" वाणी प्रकाशन नई दिल्ली सन् 2007*
5. *शर्मा राजीव लोचन - "जनजातीय जीवन और संस्कृति" सहचरी प्रकाशन, कानपुर 1967*
6. *माथुर दुर्गा प्रसाद - "मीणा जनजाति का सत्त विकास एवं संस्कृति" साहित्यागार प्रकाशन जयपुर 2014*
7. *राजस्थान समाजशास्त्रीय परिषद जयपुर 2011 वोल्यूम 3*
8. *Sharma S.L. Emerging tribal identity, Rawat publications, Jaipur 2008*